जय प्रकाश नारायण की समाजवादी आंदोलन में भूमिका

डॉ. पंकज कुमार सिंह*

जय प्रकाश नारायण आधुनिक युग का विख्यात समाजवादी चिन्तक, महान् राष्ट्रभक्त, श्रेष्ठ समाज सुधारक, क्रांति शोधक एवं उच्च कोटि के त्याग मूलक राजनीति के आदर्श को स्थापित करने वाले व्यक्ति थे। भारत के राजनीतिक विचारकों में जय प्रकाश बाबू का महत्वपूर्ण स्थान है किन्तु न तो उन्हें राजनीतिक विचारकों की किसी एक निश्चित श्रेणी में और न उनके विचारों को किसी एक निश्चित संकुचित दायरे में रखा जा सकता है। इनके पूरे जीवन का समय किसी एक निश्चित दायरे में न रहकर विभिन्न विचारधाराओं से गुजरा। ये मुख्य रूप से समाजवादी हैं तथापि वह उदारवादी मार्क्सवादी, गांधीवादी, आदर्शवादी, सर्वोदयवादी, जनतन्त्रवादी' और अन्तर्राष्ट्रीयतावादी भी है। जय प्रकाश बाबू की सम्पूर्ण जीवन यात्रा समाजसेवी के रूप में व्यतीत हुई। ये राजनीति के कुर्सी के समीप रहते हुए समाजवादी विचारधारा को अपनाये और पद की कुर्सी को ठुकरा दिया। इनके आदर्श मूलक राजनीति के जीवन को प्रो. लॉस्की की तरह इनके भी विचार परिवर्तनशील रहे हैं। जय प्रकाश बाबू व्यवस्था परिवर्तन करने के लिए महंगाई, भ्रष्टाचार, कुशिक्षा व बेरोजगारी को प्रमुख समस्या मानते थे।

जे.पी उच्च शिक्षा के साथ पश्चिमी दर्शन, खासकर बहुचर्चित मार्क्सवाद के सिद्धान्त से प्रभावित होते गए। सक्रिय राजनैतिक जीवन में उनकी मार्क्सवादी विचार पर आधारित क्रांतिकारी बरकरार रही। लेकिन समाज के बुनियादी बदलाव में उसकी कारगर भूमिका उन्हें नजर नहीं आई। समय बितने के साथ इस विचार के प्रति उनका आकर्षण कम होता गया और उन्होंने खुद स्वीकार किया कि उस विचारधारा में उन्हें Incentive to goodness का अभाव नजर आया। गांधीजी की मृत्यु के बाद वैचारिक तौर पर वह मानवीय संवेदना के प्रतीक गांधीजी के नजदीक पहुँचे थे। पूरी तरह राजनीति में सक्रिय रहने के बावजूद जे.पी. ने सत्ता की राजनीति से बुनियादी परिवर्तन की कभी उपेक्षा नहीं रखी।

जे.पी. सेवा के माध्यम से समाज में बुनियादी बदलाव लाने को अपना लक्ष्य मानते थे। जनमानस के अंदर रचनात्मक चेतना पैदा करने के उन्होंने अनेकों

राजनीतिविज्ञान विभाग बी.आर.ए.बी.यू. मुजफरपुर यू.जी.सी.नेट

प्रयोग अपने जीवन में किए। 1942 की भारत छोड़ों आंदोलन हो, समाजवादी पार्टी का प्लेटफॉर्म या भूदान–ग्राम दान के प्रयोग, चम्बल के बागियों के बीच 'सत्य' और 'अहिंसा' का अलख, यह उनकी सक्रिय जिन्दगी के महत्वपूर्ण प्रयोग बिन्दु रहे।[1]

समाजवादी आंदोलन में जय प्रकाश की भूमिका :–

1942 का भारत छोड़ों आंदोलन के बाद जब भारत गुलामी की बेडियों से आजादी प्राप्त की तब स्वतंत्र भारत में समाजवादी समाज की स्थापना का लक्ष्य रखा गया। इस समाजवादी चिन्तन विचारों का श्रेय जय प्रकाश नारायण को जाता है। ये प्रारंभ से ही समाजवादी चिन्तक रहे है। उनकी दृष्टि में समाजवाद आर्थिक और सामाजिक पुनर्निर्माण का सिद्धान्त है। उन्होंने समाजवाद के माध्यम से अनेक सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं का समाधान ढूंढ़ा। समाजवादी होने के नाते जय प्रकाश बाबू ने इस बात को स्पष्ट किया है कि सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्र में असमानता का कारण यह है कि कुछ लोगों का उत्पादन के साधनों पर बहुत अधिक नियंत्रण है और बहुसंख्यक लोग उनसे वंचित है। उन्होंने कहा कि गरीबी और अमीरी के बीच चौड़ी खाई को पाटकर ही समता मूलक समाज की स्थापना की जा सकती है। उन्होंने विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था का समर्थन किया इसके लिए गृह उद्योगों, छोटे–छोटे कल कारखानो, कुटीर उद्योगों एवं छोटे उद्योगों की स्थापना पर जोड़ दिया। उनका सोच था कि जब छोटे–छोटे कल कारखाने स्थापित किए जायेंगे तब समाज में बेरोजगारी दूर होगी। ये समाजवादी समाज की स्थापना के लिए अहिंसक जन आंदोलन की बात किया करते थे, वे वर्ग संघर्ष की जगह पर वर्ग सहयोग की बात करते थे।

वे आजाद भारत में समाज निर्माण के लिए तरह–तरह के समाज निर्माण से जुड़े कार्य करते रहे। विनोवा जी के साथ भू–दान आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। लाखों एकड़ जमीन भू–दान में मिली। गरीबों को जमीन का वितरण किया गया। इनकी सोच बुनियादी थी, जमीनी हकीकत की लड़ाई जयप्रकाश बाबू ने की। विनोबा जी के साथ मिलकर इतनी बड़ी मात्रा में भूमि–पतियों से जमीन शांति और अहिंसा से लिया गया ओर भूमिहीनों में उसका वितरण किया गया। इसी तरह इनके समाजवादी चिन्तन का विकास आगे बढ़ता गया।[2]

जय प्रकाश नारायण ने आधुनिक लोकतंत्र तथा उसकी कार्य प्रणाली पर तिखा प्रहार किया है। उनके अनुसार लोकतंत्र की समस्या एक नैतिक समस्या है। लोकतंत्र की मजबूती के लिए यह जरूरी है कि हम अपने अधिकारों, कर्तव्यों के प्रति सचेत रहे, संगठित हो जाए। लोकतंत्र से नागरिक जितना अलग और उदासीन रहेगा, उतना ही कमजोर और कुंठित लोकतंत्र चलेगा। उन्होंने यह बात जब देश में 26 जून 1975 को संकट काल की घोषणा की गई थी और जयप्रकाश बाबू के सहित विपक्ष

के सभी राजनेता जेल में बंद कर दिए गए थे तब अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा था कि जब देश पर आपात स्थिति लाद ही गई तब लोगों को जो प्रतिक्रिया हुई वह उतनी प्रभावशाली नहीं हुई जितनी होनी चाहिए।

''नक्सलवाद एवं जय प्रकाश नारायण'' :–आज देश के सामने नक्सलवादियों से निपटने की एक गंभीर चुनौती आ खड़ी है। देश के तकरीबन 180 जिला इससे प्रभावित हैं और धीरे–धीरे नये क्षेत्रों में भी इसका फैलाव हो रहा है। नक्सलवाद की समस्या पर जय प्रकाश नारायण का विचार काफी सारगर्मित है। उन्होंने कहा था कि एक तरफ हम नक्सलवादियों को गाली देते हैं तो दूसरी तरफ गरीब व्यक्ति को भोजन देने की व्यवस्था न कर सके तो ऐसा कब तक चलेगा। मुसहरी प्रखण्ड में जब नक्सलवादी आंदोलन का तांडव नृत्य चल रहा था तो उस समय जय प्रकाश नाराण ने अपना जान जोखिम में डालकर उस क्षेत्र का सघन दौरा किया था और नक्सलवादियों से बातचीत करके इस समस्या को सुलझाकर बातचीत करने का प्रयास किया था और उनके व्यक्तिगत प्रयास से उस क्षेत्र में शांति आयी थी। नक्सलवाद समस्या के लिए उन्होंने उस समय मुख्य रूप से भूमि कानून सुधार से त्रुटि को दोषी पाया था। वे इस प्रखण्ड में डेढ़ साल तक रहे और किसानों और मजदूरों की समस्याओं को बातचीत के द्वारा सुलझाने का सार्थक प्रयास किया था। बिल्कुल गांधीवादी तरीके से नक्सलवाद प्रभावित क्षेत्रों का भ्रमण करते रहे। कभी मालिकों के दरवाजे पर जाते तो कभी मजदूर की झोपड़ी के सामने खाट पर बैठकर सुख दुःख को सुनते। जो लोग नक्सली कहे जाते थे उनके घर भी जाते। जय प्रकाश बाबू की धर्म पत्नी प्रभावती जी उनके साथ रहती थी और वे घर के आंगन में जाकर महिलाओं से मिलती। हर जगह जे.पी. यही समझाते की गाँव में स्वराज लाना है, अपने गांवों को एक बड़ा परिवार बनाना है। सबको सुख दुःख में शरीक होना है, आपस में बांट कर खाना सिखना है। इस प्रकार जे.पी. ने नक्सलवाद की लड़ाई लड़ी। आज तो बंदूक की नोक पर नक्सलवाद मिटाने की बात कही जा रही है। यह कतई सम्भव नहीं है।

''सम्पूर्ण क्रांति और जय प्रकाश'' जय प्रकाश नारायण के राजनीति विचारों की अंतिम परिणती सम्पूर्ण क्रांति में होती है। जय प्रकाश जी की सम्पूर्ण क्रांति की कुछ लोगों ने काफी आलोचना की है। आलोचना का कहना है कि क्रांति, होती है। क्रांति क्या है? जय प्रकाश बाबू से बहुत पहले राजनीति विज्ञान का जनक अरस्तू ने क्रांति पर विस्तार से प्रकाश डाला है। अरस्तू ने समूल परिवर्तन की बात कही है। अरस्तू का समूल परिवर्तन पर जो विचार है वही जय प्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रांति है। जय प्रकाश नारायण ने कहा था कि सम्पूर्ण क्रांति के वैचारिक आधार पर हम समाज के सभी अंगों में ऐसा परिवर्तन चाहते हैं जिसमें समता,

स्वतंत्रता और भ्रातृत्व की भावना के आधार पर एक नये समाज की रचना हो और एक नये समाज का निर्माण हो सके। भारतीय लोकतंत्र को वास्तविक तथा सुदृढ़ बनाना जनता का सच्चा राज कायम करना है। समाज से अन्याय, शोषण आदि का अंत करना एक नैतिक सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक क्रांति करना एक नया भारत बनाना है और सब कार्य सम्पूर्ण क्रांति के माध्यम से ही हो सकता है। केवल सरकार को बदल देने से समस्या का निदान नहीं होता, इसके लिए व्यक्ति और समाज को भी बदलना होगा यही हमारी सम्पूर्ण क्रांति है। हम नया समाज बनाना चाहते हैं इसलिए हम सरकार और समाज, शिक्षा और चुनाव, बाजार और विकास की योजना, हर चीज में परिवर्तन चाहते है। शासन के द्वारा समाज में क्रांति नहीं आ सकती और वह भी सम्पूर्ण क्रांति।

इस तरह जय प्रकाश नारायण आजाद भारत में समाज निर्माण के लिए तरह–तरह के समाज निर्माण का कार्य करते रहे। विनोबा जी के साथ भू–दान आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिए। लाखों एकड़ जमीन भू–दान में मिला। आचार्य नरेन्द्रदेव, आचार्य कृपलानी, जवाहरलाल नेहरू, डॉ. राम मनोहर लोहिया, अशोक मेहता आदि जन नायकों ने एकजुट होकर भारत की आजादी में अपना सहयोग किया। आजादी के बाद स्वतंत्र भारत में समाजवादी समाज की स्थापना का लक्ष्य रखा गया।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने जय प्रकाश नारायण की समाजवादी विचारधारा के लक्ष्य को देखते हुए इन्हें भारत वर्ष में समाजवाद का अधिकारिक विद्वान माना है। समाजवाद को लेकर आलोचकों ने जे.पी. को पलायनवादी कहा है। मेरा यह मानना है कि जे.पी. पलाय नवादी नहीं थे वे क्रांति शोधक थे। समाजवादी मूल्यों की स्थापना के लिए उनके अन्दर जो छटपटाहट थी उसको आलोचकों ने नजर अंदाज किया है और इसी छटपटाहट की वजह से वे विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम चलाते रहे लेकिन अपने मूल दर्शन में समाजवादी चिन्तन से कभी विचलित नहीं हुए। ऐसी स्थिति में उनको पलायनवादी कहना उचित नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ :–

(1) अजीत कुमार, बिहार का इतिहास, पटना, 2003
(2) डा0 अजय कुमार सिंह, हिस्ट्री ऑफ बिहार, पटना, 2003